IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

संस्कृत सगुणोपासक कवियों के आकलन में योगेश्वर श्रीकृष्ण

डॉ. प्रतीक द्विवेदी

प्राध्यापक

श्री वैदिकादर्श स्ना. सं. म. विद्यालय, सरयूवाग, अध्योध्या

शोध सारांश : योगेश्वर श्रीकृष्ण की अमर गाथा श्रीमद्भगवत् गीता के रूप में युगों–युगों तक एक विशिष्ट महात्म्य की ओर अग्रसर रहते हुए समाज को नई दिशा व दशा का साक्षात्कार कराती रहेगी। स्वयं श्रीकृष्ण द्वारा श्रीमद्भगवत गीता में सम्पूर्ण वेदों के सार को समाहित करते हुए जीवन को जीवन्त बनाने की कला को निरूपित कर दिया गया है। इसकी गुणवत्ता को देखते हुए मैंने संस्कृत सगुणोपासक कवियों के आकलन में योगेश्वर श्रीकृष्ण शीर्षक से इस आलेख को महिमा मण्डित किया है। प्रस्तुत शोध–पत्र में निम्नबिन्दुओं को ध्यान में रखकर अनुसरण किया है, ये बिन्दु है– प्रस्तावना, विषय परिचय, विषय–विस्तार, उपयोगिता एवं उपसंहार।

प्रस्तावना के अंतर्गत योगेश्वर श्रीकृष्ण की महत्ता के संबंध में महर्षि वेदव्यास जी द्वारा महाभारत में नायक के रूप में जगह–जगह सांख्य योग एवं धर्मान्तर्गत कार्यों का साकार विग्रह के रूप में वर्णन किया गया है। विषय परिचय के अंतर्गत योग के सम्बन्ध में श्रीमद्भगवत गीता ही सर्वश्रेष्ठ द्वार है, इसकी महत्ता को भारत ही नहीं अपितु विश्व के कई देशों में ग्राह्य है। विषय विस्तार के अंतर्गत योगेश्वर श्रीकृष्ण की महिमा का वर्णन सविस्तार श्रीमद्भगवत गीता के अनेक उदाहरणों से पुष्टित एवं पल्लवित किया गया है।

उपयोगिता के अंतर्गत भगवान श्रीकृष्ण का अवतार लोक ग्राही सद्गुणों जैसे–अर्जुन से मित्रता का निर्वहन, प्रेम के साकार विग्रह, बन्धु–बान्धव स्नेह, स्वयं के अवतार की महत्ता एवं श्रीमद्भगवत गीता में उपदेशों के द्वारा सभी समस्याओं के निराकरण का मार्ग है। उपसंहार के अंतर्गत श्रीकृष्ण ही सर्वश्रेष्ठ योगगुरु, मार्गदर्शक, साधक, कर्मक्षेत्र, धर्मक्षेत्र, आध्यात्मिकता एवं व्यावहारिकता के अनुपम भण्डार है। इसलिए संस्कृत सगुणों पासक कवियों के आकलन में योगेश्वर श्रीकृष्ण शीर्षक लोक ग्राह्य प्रमाणन सिद्ध हो सकेगा।

मुख्य शब्दः संस्कृत, सगुणोपासक, कवि, आकलन, योगेश्वर, श्रीकृष्ण, महाभारत, धर्मान्तर्गत, श्रीमद्भगवत, बन्धु, बान्धव, स्नेह, आदि।

संदर्भ स्रोतः

[1]. श्रीमद्भागवत गीता 2/48

[2]. महाभारत 4/7

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 2, Issue 2, December 2022
Impact Factor: 6.252

[3]. श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4, श्लोक 9

[4]. श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 2, श्लोक 51